Volume: 3 Issue: 2 Pages: 47-51

राम चरित मानस में नारी

*[1] डॉ. शिव कुमार व्यास

*[1] सह-प्राध्यापक जी.एस. कालेज, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 5.231
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 17/Jan/2024
Accepted: 28/Feb/2024

***Corresponding Author**
डॉ. शिव कुमार व्यास
सह-प्राध्यापक जी.एस. कालेज, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश:
गोस्वामी तुलसीदास जी कृत रामचरित मानस वैशिविक धरातल पर स्थापित कालमयी ग्रंथ है, जो उदात्त मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा समाज निर्माण एव लोक हितार्थ करता है मानस के चरित्र देशकाल वातावरण के अनुरूप आचरण और व्यवहार करते है तथा अपेक्षित अथवा अनपेक्षित मूल्यों के संवाहक बनकर तत्कालीन समाज को प्रतिबिबित करते है विशेष रूप से इक के नारी पात्रों का अपनी विशिष्टाओ के साथ विविधता पूर्ण चित्रण है मानस में कोशल्यादि रानियाँ पावर्ती सीता अनुसुइया शबरी मंदोदरी आदि आदर्श मूल्यों की रक्षिका है वहीं मंथरा शूर्पणखा आदि भी उसी समाज में है जो अपने समाज के लिए घातक आचरण के कारण निंदा के योग्य है रामचरित मानस नारी चरित्र की समस्त विशिष्टताओं को संपूर्णता में उजागर कर स्थापित करने वाला ग्रंथ है।

मुख्य शब्द: उदात्त समरसता संवाहक मूल्य समाहार कुटिल मतिधीरा अधीरा विकल विषाद उद्धिनन शील उद्घोष अभिभूत सत्यपथगामिनी

प्रस्तावना

वैश्विक पटल पर गोस्वामी तुलसीदास कृत राम चरित मानस का विशिष्ट स्थान है। उदात्त मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास समाज निर्माण, लोकहित की दृष्टि इस महाकाव्य में दृष्टव्य हैं। इस रधुनाथ गाथा में जो भी है वह नाना पुराण निगमागम् सम्मत ही है। इसमें जीवन मूल्यों की व्याख्या है। सामाजिक समरसता, समन्वय, सद्भाव एवं जागतिक कल्याण की शुभेच्छा से ओतप्रोत यह अमर रचना भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं।

परिवार - समाज का सांगोपांग निरुपण इसमें सर्वत्र दृष्टव्य हैं। सनातन संस्कृति के संवाहक राम को धुरी में रखते हुये उनके समग्र चरित्र के माध्यम से हिन्दू धर्म और उसकी सनातनी संस्कृति को ग्रंथ में भावित कर पुष्ट करने का सार्थक प्रयास किया गया है। रामचरित मानस में पुरुष अथवा नारी पात्र सभी अपने चरित्र के माध्यम से विविध् अपेक्षित अनपेक्षित मूल्यो के संवाहक बनकर अपने स्वयं का अथवा समाज का स्वरुप निदर्षन करते हैं। कुछ रुप तात्कालिक तो कुछ सार्वकालिक बन सामने आते है।

श्रेष्ठ भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक धरातल पर जिस उदात्त व्यक्ति, परिवार और समाज की अपेक्षा की गई अथवा उसकी निर्मिति के प्रयास किये गये, उसके आदर्शो के प्रतिकूल जाने वाले पुरुष अथवा नारी कोई भी हो, की भत्र्सना होती है - जो आदर्शो अनुकूल हैं वे प्रतिष्ठित होते है।

रामचरित मानस में अनेक नारीपात्र है जिनका उनकी अपनी विशिष्टताओं के साथ विविधता लिये हुये यथा काल, यथा परिस्थिति निरुपण हुआ हैं।

जो जहाँ जैसा चरित्र और आचरण करते सामने आया भारतीय सांस्कृतिक सनातन मूल्यों की कसौटी पर उसे कसा गया फिर उसका यथा योग्य मंडन या खंडन कर सांस्कृतिक मूल्यों, जीवन मूल्यों, को जीवंत करने का प्रयास किया गया।

रामचरित मानस में कौशल्यादि रानियाँ, पार्वती, सीता, अनुसुइया, शबरी, मंदोदरीं की महिमामयी रक्षिका हैं। मंथरा, शूर्पणखा आदि भी उसी समाज में है जो दुष्ट प्रवृति के कारण निंदा के योग्य हुई, क्योकि इनका आचरण, चरित्र, प्रवृत्ति आदर्श समाज के लिये घातक होने से अवांक्षनीय है। गुण-दोष की विवेचना ग्राहय अथवा त्याज्य की मुखर घोषणा आवश्यक

है। आदर्श व्यक्ति समाज के निर्माण का पथ ऐसी ही घोषणा से प्रशस्त होता है।

नारी की गरिमा-गौरव की प्रतिष्ठा उनके मान-मर्यादा की चिंता इस रामचरित मानस में गंभीर भाव से की गई है। नारी - जो प्रथम गुरु पद पर प्रतिष्ठित है, वह एक संतान को ही जन्म नही देती अपितु संसार को जन्म देती है - तो फिर उसका दायित्व भी गुरुतर हो जाता है। उसमें प्रसूत संसार संस्कारवान बनें- सुदृढ संस्कारों की चिंता के कारण नारी के प्रति आधारभूत संस्कार और कर्त्तव्य कहें गये जो मनगढ़ंत और थोपे गये या खोंखले नही है - शास्त्र संम्मत हैं। इस दायरे में पुरुष वर्ग भी हैं। शीलयुक्त, संस्कारवान नारी की सराहना ऋग्वेद में की गई है।

नारी का स्थान उत्कृष्ट है, उसमें उदात्त भावनाओं का समाहार है -जीवन शक्ति का स्त्रोत है नारी। मानस में वर्ण, जाति, धन इत्यादि की समस्त सीमाओं और भेदों के आगे जाकर नारी चर्चा है। ऐसी शीलवंती कर्म-धर्म सम्पन्ना नारी जो समाज को उत्कर्श के सोपानों पर ले जाती है। किंतु परिवार समाज की रीढ़ कही जाने वाली नारी जब किन्ही कारणों अथवा परिस्थितियों वश कर्त्तव्य मर्यादा से च्युत होती हैं तो न केवल उसके लिये वरन् परिवार व समाज के लिये आपदाओं विडम्बनाओं के द्वार खोल देती हैं।

रामचरित मानस में विविध नारी पात्र अपनें इसी चारित्रिक उतार-चढ़ाव में उत्कृष्ट अथवा निकृष्ट रुप में सामने आते हैं।

कौषल्या ने नारी के उदात्त रुप को प्रस्तुत किया। पुत्र राम ने वनगमन् के प्रसंग में अपनें पहाड़ से दुख को राई सम रखकर वे स्थिति को सभ्भालने का प्रयास करती हैं। सभी पुत्रों पर रामवत् स्नेह कौशल्या के ह्रदय में है। प्रत्येक स्थिति में अपने कर् कर्त्तव्य, शील का ज्ञान और उसकी रक्षा की चिंता उत्तम नारी गुण है।

कैकेई की कुटिल करतूत जानते समझते हुये भी कौषल्या मतिधीरा हैं। वे कैकेयी के प्रति द्वेष नहीं रखतीं।

कौशल्या धैर्य, त्यागशीलता, निशपटता और पवित्र प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं -

सरल सुभाऊं राम महतारी

अधीर विकल, विषाद ग्रस्त राजा दशरथ से कहें गये उदगार उदात्त पत्नी धर्म की व्याख्या करते हैं। राजा की उद्विग्न दशा पर कौशल्या अनर्थ के प्रति सचेत हो पति दशरथ को समझाती हैं-

करनधार तुम अवध जहाजू।
चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू।।
धीरज धरिअ त पाइअ पारु।
नहिं त बूड़िहिं सबु परिवारु।।

घर, परिवार, परजन सभी को बचाने की चिंता वह भी ऐसी विकट स्थिति में- यह कौशल्या का धीरोदात्त चरित्र है। मातृत्व दया प्रेम, तप के अगाध सिंधु कौशल्या के ह्रदयगत हैं।

राजा दशरथ के सुरपुर गमन के बाद भरत शत्रुघ्न के अवध आने और सारी घटना जानकर शोकमग्न होते वक्त उन्हें माता कौशल्या ही सम्भालती है-

वे कौशल्या जिन परशोक का बज्रपात हुआ है।

भरत के प्रति राम सा ही स्नेह है उनमें –

देखि सुभाऊ कहत सबु कोई।
राम मातु अस काहे न होई।।
माताँ भरतु गोद बैठारे।
आँसु पोंछि मृदु वचन उचारे।।

धीरा कौशल्या भरत को समझातीं हैं-

अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू।
कुसमय समुझि सोक परिहरहू।।

स्वयं की हाँनि-दुख को बुद्धि-विवेक सहित शिरोधार्य कर आस्था को बनाये रखने वाली कौषल्या में नारी की अनुपम महत्ता का वैशिष्ट्य दर्षनीय हैं।

इसी प्रकार सती पार्वती जैसी प्रेम-तप-सेवा की जीवंत प्रतिमूर्तियों का भी विराट चरित्र रामचरित मानस में है - उनके आदर्श चरित्र का अपना आदर्श मान उनको अराध्य बना भारतीय नारियाँ महान् पतिव्रत धर्म को प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य बनाती है।

पार्वती को नारद मुनि ने विष्णु से विवाह का प्रलोभन दिया- किन्तु तप निष्ठा से शिव के प्रति अनुराग बना ही रहा-

जन्म कोटि लागे रगर हमारी।
बरऊँ शंभू न त रहऊँ कुआरी।।

अवधूत शिव को देखकर पार्वती की माँ का दुख सम्भलता ही न था- निर्णय कर लिये अपने जीते जी पार्वती का विवाह ऐसे वर से न करुंगी- तब पार्वती ने माँ से जो वचन कहे वे, उनके उत्तम चरित्र का दर्शन कराते हैं-

जनि लेहु मातु कलंक करुना परिहरहु अवसर नहीं,
दुःख सुख जो लिया लिलार हमरे जाब जहँ पाउव नहीं।

यह दृढ विशवास, धीरता, शिव के प्रति प्रेम जिसमें पर्वत सी उच्चता और अडिगता है। ऐसी विशिष्ट पार्वती की पूजक सीता हैं। हांलाकि पार्वती आदि- शक्ति निरुपित है, फिर भी नारी रुप में उनका चरित्र समझदार, पतिव्रता, ज्ञानवती गुण रत्नों से युक्त है। जो नारी के लिये आदर्श हैं।

नारी उत्कृष्ट रुप सीता मे दिखाई देता है। सीता- जो सबसे पहले जनक की संस्कारित सुशिक्षित और सयोग्य कन्या है- पूर्णतः पिता के अधीन सुखी पुत्री जो अपना भविष्य भी पिता के अधीन सुखी पुत्री- जो अपना भविष्य भी पिता के विशवास की ही गोद मे रख देती है। अपनी मन मर्जी का कुछ नहीं-एक दर्शनीय और अनुकरणीय आदर्श है यह। त्याग, तप को जीवंत करती है सीता-पितु गृह का यह अनुशासन, जीवनाभ्यास, पतिगृह में बिताये जाने वाले भावी जीवन की सुदृढ नींव तैयार करता है। सीता के इसी त्याग और तप की परिणति राम जैसे पति प्राप्ति के सफल रुप में हुई।

सीता रुपवती तो थी पर इससे बढ़कर वे शील और संस्कार संपन्ना थी। जब सौंदर्य के साथ गुणों का सुशीलता का पुट न लगें तब तक वह सराहा नही जाता। सारे सराहनीय सुलक्षण सीता में हम पाते हैं। सीता पति सेवा धर्म निर्वाह को पूर्णरुपेण चरितार्थ करती हैं-वे पत्नी रुप में नारी के लिये बताये गयेधर्म और कर्त्तव्य का पूर्ण निष्ठा और समर्पण से पालन करती है -

एकई धर्म एक व्रत नेमा।
कर्म वचन मन पति पद प्रेमा।।

जिस सीता ने ऐश्रर्य और वैभव मय जीवन बिताया वही सीता पतिपरायणा हो राम संग वन गमन का अनुरोध करती है। उनके सामने कई तरह के संकट और कंटक गिनाये जाते है, किंतु सीता अपने तर्को से सभी को निरूत्तर और संतुष्ट करती है- सारे संबधियों के प्रति उनका आदर और सम्मान है लेकिन पति के सान्निध्य से प्रथम नही-

तनु धनु धाम धरनि पुर राजू।
पति विहीन सबु सोक समाजू।।
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी।
तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी।।

अनेकानेक विषम परिस्थितियों में स्थिरचित्त सीता आदर्श नारी के धर्मो को चरितार्थ करती है। रावण और उसके वैभव को देखती तक नहीं- उसके संपूर्ण ऐश्रर्य को तिनके से अधिक नहीं लेखती मति वियोग ग्रस्त सीता का तन-मन राममय है-

निज पद नयन दिएँ मन
राम पद कमल लीन।

पतिव्रत धर्म में सीता खरी उतरी। अपने आचरण द्वारा इसका व्यावहारिक निदर्षन भी किया। यही हैं शील सौंदर्य। संस्कार ज्ञान वास्तव में आचरण में आना चाहिए। सुंदर काण्ड में वाल्मीकि भी कहते हैं-

सुन्दरे सुन्दरी सीता.....

आद्योपांत, सीता का जीवन आदर्श मय है। वे अनेक दास-दासियों के, सेवकों के रहते हुये भी स्वयं गृह कार्य करती है-

निज कर गृह परिचरजा करई

राम द्वारा अपने परित्याग को सीता सहर्ष स्वीकार करती हैं। वे लक्ष्मण से माताओं के लिये संदेष में कहती है कि स्त्री के लिये पति ही सर्वस्व है, गुरु, बंधु, देवता है- प्राण देकर भी पति का प्रिय करना स्त्री का धर्म है- वाल्मीकीय रामायण में देखें-

पतिर्हि देवता नार्याः पतिर्बन्धुः पतिर्गुरुः।
प्राणैरपि प्रियं तस्माद् भर्तुः कार्यं विशेषतः।।

सीता अविचल भाव से राम के अपयश को दूर करने के निमित्त यथा साध्य यथा आवश्यक योग देना अपना बड़ा कर्त्तव्य समझती हैं। सीता की त्यागशीलता और पति निष्ठा महान हैं।

सीता के लिये दयाचंद्र कहते है-

"संसार में जितने भी उत्तम गुण हैं, वे सब मानो विधाता नें उनमें ही कूट-कूट कर भर दिये थे।स्त्रियों में सबसे उच्चासन सीता जी का है। सीता जी ने मानो जन्म लेकर संसार को आदर्श स्त्री का स्वरुप बता दिया।''
हर रिश्ते के आदर्ष व्यवहार और उनका उच्च स्तरीय निर्वाह वंदनीय, अनुकरणीय है।

धर्मनारायण वर्मा के शब्दों में -

सीता आज भी स्त्री जाति के लिये आदर्श हैं, प्रेरक है। सीता ज्ञान व व्यवहार कुशलता में भी आदर्श हैं। प्रेरणा की आग्रत प्रतिमा सीता है। संस्कृति की शोभा सीता हैं। कष्ट की घड़ियों में धैर्य का प्रतिमान सीता हैं।
सुमित्रा माता रुप की पराकाष्ठा है। लक्ष्मण तभी ऐसे सुलक्षण पुत्र हुयें। माता और पुत्र दोनो ही त्याग की प्रतिमूर्ति हैं। सुमित्रा जब रामवनवास होने कि खबर पाती है तब लक्ष्मण से उनके द्वारा कहे वचन उत्कृष्ट चरित्र को व्यक्त करते हैं- वे कहती है- तुम्हें राम के साथ वन जाने के लिये मुझसे आज्ञा लेने की आवश्यकता नही है क्योकि-

तात तुम्हारि मातु वैदेही।
पिता राम सबु भांति सनेही।।

फिर त्यागशील विशील ह्रदय से स्वर फूटते हैं-

जौं पै सीय रामु बन जाहीं।
अवध तुम्हार काज कछु नाहीं।।

एक आदर्श माँ के रुप में वे पुत्र लक्ष्मण को गुरु,माता,भाई स्वामी की सेवा की सीख देतीं हैं। उनका पुत्र के प्रति स्वार्थी व सांसारिक ममत्व नहीं अपितु ऐसा ममत्व है जो पुत्र के चातुर्दिक कल्याण का कारक है। सुमित्रा यह भली भांति जानती है कि -

पुत्रवती जुवती जग सोई।
रघुपति भगत जासु सुत होई।।

सुमित्रा भारतीय नारी आदर्श स्वरुप की संवाहिका हैं। पुत्र को निस्वार्थ सेवा धर्म की सीख देती हैं सुमित्रा। परिवार और समाज में समन्वय-सामंजस्य बनाने की क्षमता रखने वाला चरित्र है, यही उत्तम संस्कारवान संतति हेतु प्रशस्त आदर्श है।

सुमित्रा की सीख आदर्ष है-

रागु रोषु इरिषा मद मोहू।
जनि सपनेहु इनके बस होहू।।
सकल प्रकार विकार बिहाई।
मन क्रम वचन करेहु सेवकाई।।

मानस में उर्मिला चाहे प्रत्यक्ष न दिखाई देती हो, किन्तु उसका त्याग समर्पण स्वयं ही उद्घोष करता है। उर्मिला चाहकर भी

पति लक्ष्मण के साथ इसलिये वन नहीं गई कि पति के राम-सीता के प्रति सेवा कार्य मैं बाधा न बन जाऊं। अवध की सेवा ही पति सेवा है, उसे ही धर्म मानकर जानकर उर्मिला ने अपने जीवन के अनमोल पलों को उसमें समर्पित कर दिया- उर्मिला तो भवन में रही पर उर्मिला में वन रहा।

मैथिलीशरण गुप्त साकेत में कहते है-

मानस मंदिर में सती,
पति की प्रतिमा थाप।
जलती थी उस विरह में,
बनी आरती आप।।

त्याग की दिशा में उर्मिला अपने पति लक्ष्मण से आगे दिखाई देती है। वह लक्ष्मण को उनको लग रहे संभावित भय से मुक्त करती है और उन्हें राम संग वनवास की सहमति देती है।

मेरे उपवन के हरिण,
आज वनचारी।
मैं बांध न लूँगी तुम्हें,
तजो भय भारी।।

उर्मिला उस भारतीय नारी की जीवंत प्रतिमा जान पड़ती है, जो रुदन, दीनता आदि विचलित कर देने वाले झंझावातों के मध्य संयम, कर्त्तव्य, त्याग के साहस से अविचल रहती है।
रामचरित मानस में कैकेयी सर्वाधिक लांक्षा और अनादर की भागी बनी। वैयक्तिक हित साधन पराकाष्ठा लांघने के कारण कैकेयी का उज्जवल चरित्र धूल धूसरित हो गया। निर्मल मना, ममतामयी माँ, स्वस्थ प्रकृति, धीरा नारी कैकेयी मोह के वशीभूत होकर अवध के वध का कारण बन गई-
उत्तम श्रेणी से पतित हो कैकेयी अधम श्रेणी में आ गई। अति अहंकार वश वह रुपवान होते हुये भी कुरुपा, ज्ञानवती होते हुये विवेकहीन हो गई। दासी मंथरा की कुटिलता में उसे इतनी भलाई दिखी की पुत्र-पति को भी त्यागने के निम्न स्तर पर आ गई-

परऊँ कूप तुअ बचन पर
सकऊँ पूत पति त्याग

कुटिला मंथरा उसकी प्राणप्रिया और परम हितैषी हैं। कैकेयी को विचार शून्यता ही ले डूबी।
कैकेयी का यह कुटिल चरित्र और कृत्य चहुँ और निंदित हुआ, क्योंकि सृजन ही जिसका स्वभाव होना चाहिये वह विध्वंसक बने तो समाज और लोक वह स्वीकार्य नहीं हो सकता।
स्वेच्छा पारायण, अतिमहात्वाकाँक्षी कैकेयी के अवध के वैभव में आग लगा दी।राजा दशरथ के रथ के पहिये को निकलने से बचाने के लिये, (देवासुर युद्ध के समय), धुरी की कील निकलने पर अपनी अंगुली लगाई थी, राजा दशरथ की जान बचाई थी, अब वहीं कैकेई दशरथ सहितपूरे अवध की नाक में दम करती हुई खड़ी थी। राजा विनय करते है उनके चरण पकड़ते हैं कि राम वनवास के बदले कुछ भी माँग ले पर कठोर ह्रदय हुई वह कटु वचन कहती है-

कहई करहु किन कोटि उपाया।
इहाँ न लागिहिं राउरि माया।।

स्वार्थी, हठीली कैकेयी के कुकृत्य को जिसने जब सुना उसकी आलोचना ही की। वाल्मीकीय रामायण में दशरथ कैकेयी को राख में छिपी हुई आग के समान भयंकर कहते हैं-

न तन्मे प्रियं पुत्र शापे सत्येन राघवः।
छन्नया चलितस्वस्मि स्त्रिया भस्भाग्नि कल्पया।।

अतिविशवास, अंधविस्वास जीवन के लिये घातक है-अपना हित-अहित अपने ही विवेक बुद्धि की आँखो ज्यादा साफ और सत्य दिखाई देता है। कैकेयी मंथरा की नेत्र, बुद्धि-नेत्र से देख रही थी।

अंततः कैकेयी पघाताप तो करती किंतु अवसर जाता रहता है-

लख सीय सहित सरल दोउ भाई।
कुटिल रानि पछतानि अघाई।।

रामचरित मानस में और भी नारी पात्र है जो अपने कार्य व्यवहार और कार्य चारित्रिक विशेषताओं से अपने स्तर का परिचय देते हैं।
जाति की भीलनी शबरी अपनी करुणा और भक्ति के कारण गौरव की प्रतिमूर्ति बन गई थी। वह सीताराम के दर्शन पाकर धन्य हुई।

स्वंम को अधम कहने वाली शबरी को राम ने उसे सम्मान दिया

"कोई विधि अस्तुती करौं तुम्हारी।
अधम जाती मैं जड़मति भारी।
कह रघुपति सुनु भामिनी बाता।
मानउँ एक भगति कर नाता।

शबरी के ह्रदय में नारी स्वभाव सुलभ दया, करुणा वात्सल्य भाव भरपूर थे। भीलनी होकर भी उसका चरित्र अध्यात्म तथा भक्ति से पुष्ट होकर उच्च हो गया था। स्नेहमयी, सरल मना थी शबरी ।
रुप नहीं वास्तव में भाव की ही महता है। वहाँ शबरी और यहाँ अशोक वाटिका में सीता के पास त्रिजटा। राक्षस कुल में जन्म लेकिन ह्रदय में, भावों में, चिंतन में देवत्व - इन्ही गुणों के कारण त्रिजटा भयभीत नही करती - भयमुक्त करती है।

त्रिजटा के स्वभाव से अभिभूत जानकी उसे माता कहकर संबोधित करती है-

"मातु बिपति संगिनि तैं मोरी"

दया, प्रेम, बुद्धि, विवेक सहित राम के प्रति अनुराग से भरी त्रिजटा राक्षस कुल में जन्म कर भी नारी सुलभ गुणरत्नों को धारण किये रहती है।

एक ओर राक्षस कुल में जन्मी, रावण पत्नी मंदोदरी पतिव्रत र्धम की संरक्षिका और संवाहिका बन अन्याय, अधर्म के पथ पर बढ़ते पति को रोकने का भरपूर प्रयत्न करती है।

"कंत राम विरोध परिहरहू"

मंदोदरी सत्पथगामिनी हैं उसकी धर्म बुद्धि है, परमात्मा के प्रति उसकी अगाध भक्ति है, वह विवेकी है, वही अनीति की राह में रावण का साथ नहीं देती वरन् उसे अनेक तरह से समझाती है - जिनके दूत का इतना अपरिमित बल है, तो फिर उन राम के बल का अनुमान कर परिजनों, पुरजनों की रक्षा करें-

"राम बाना अहि गन सरिस,
निकर निसाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब लगि,
जतनु करहु तजि टेक।

अनेकानेक दृष्टांतो, उदाहरणों द्वारा मंदोदरी पति की रक्षा और अधर्म अनीति की रवाई में पतन होने से बचाने के अथक अपक्रम करती है। मंदोदरी में धर्ममयता, पतिव्रत्य तथा ईषभक्ति के आदर्ष गुण थे और वह उन गुणों के प्रभाव सें अपने पत्नी धर्म का पालन करती है।पति को ईशवरोन्मुख करने का प्रयास करती है-

"कृपासिंधु रघुनाथ भजि
नाथ विमल नस लेहु

निष्कर्षतः रामचरित मानस में नारी की अपने विशिष्ट चरित्र और लौकिक व्यवहार में देशकाल, वातावरण और तात्कालिक अवस्था उन पर अपना प्रभाव डालती हैं। उदात्त चरित्र अप्रभावी रहते हुये प्रतिकूलता को चाहे अनुकूल न कर सके उसके शूल को अवश्य कम कर देते हैं।
रामचरित मानस नारी के जिन महनीय गुणों की अपेक्षा रखता है उनका समाज रचना के आवश्यक तत्वों के रूप में देखता है- अनेक पात्र उसमें खरे उतरते हैं। रामचरित मानस की उत्तम चरित्र नारी ममता, वात्सल्य, स्नेह की शक्ति और त्याग, संयम, पतिव्रत धर्म की साकार प्रतिमा हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. श्री रामचरित मानस - गो तुलसी कृत (गीताप्रेस)
2. ऋग्वेद
3. मनुस्मृति
4. मानस महाकाव्य में नारी-बृहमर्षि विष्वात्म बावरा
5. सीता चरित - दयाचंद्र गोयलीय
6. भगवती सीता चरित्र एवं महात्म्य-धर्मनारायण वर्मा
7. साकेत - मैथिलीशरण गुप्त
8. तुलसी मुक्तावली - उदयभान सिंह
9. श्री वाल्मीकि रामायण